१.२.१ संस्थान द्वारा प्रस्तावित सभी विभिन्न पाठ्यक्रमों में (वैज्ञानिक-तकनीकी-साहित्य संयुक्त शास्त्री बी.एस.सी.आदि पारंपरिक उपाधियों में योग शास्त्र का प्राचीन-आधुनिक गणित / अर्थशास्त्र / प्रबन्ध शास्त्र /कानून शास्त्र / कंप्यूटर विज्ञान / आयुर्वेद सिद्धांत (दर्शन) / कृषि पाराशर और वृक्ष आयुर्वेद के समायोजन द्वारा शुरू किए गए नवीन पाठ्यक्रम और इसके द्वारा उभरते विषयों में पाठ्यक्रम / संस्कृत आश्रित पाठ्यक्रम) अभिनव पाठ्यक्रम।

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय ने समस्त शास्त्री (स्नातक) एवं आचार्य (स्नातकोत्तर) स्तर पर प्राचीनशास्त्रीय विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों को भी अत्यन्त वैज्ञानिक व अनुपम रीति से समाहित किया गया है। दर्शन,योगतन्त्र आदि विषयों के पाठ्यक्रमों में श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग की अवधारणा तथा पातंजल योगदर्शन, योगसारसंग्रह आदि पाठ्यांशों में योग के विवध आयामों का अध्यापन कराया जाता है । योग सूत्र को सांख्य योग पाठ्यक्रम में शास्त्रीस्तर पर और आचार्यस्तर पर तुलनात्मकदर्शन में सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप से अध्यापन कराया जाता है। योगविषय में शास्त्री ,आचार्य ,डिप्लोमा विविध कार्यक्रम उपलब्ध हैं । ऋग्वेद के पाठ्यांश का हिरण्यगर्भसूक्त यौगिकप्रक्रिया से सृष्टि की उत्पत्ति का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रतिबोधित करता है ।

- वेद वेदांगसंकाय के अंतर्गत ज्योतिष विषयक पाठ्यक्रम खगोलीय विषयों का अध्ययन और अनुसंधान करने के लिए प्रोत्साहित करता है यथा वेधशाला के माध्यम से पाठ्यक्रम में निर्धारित सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्तशिरोमणि ग्रन्थ में वैज्ञानिक पद्धति से यन्त्रों के निर्माण एवं प्रयोग का बोध कराता है । शास्त्री प्रथम वर्ष में ज्योतिष सिद्धांत के चतुर्थ प्रश्नपत्र में निर्धारित सूर्यसिद्धान्त ,गोलपरिभाषा तथा द्वितीय वर्ष में चापीयत्रिकोणमिति प्राचीन एवं आधुनिक भैतिकविज्ञान के समन्वय को दर्शाता है। सिद्धांत शिरोमणि में आकर्षण सिद्धांत को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है, उसी प्रकार आचार्य में निर्धारित आर्यभटीय ग्रन्थ में पृथ्वी के घूर्णन के सिद्धांत को ग्रहगणना के क्रम में वैज्ञानिक रूप से संकेतित किया गया है, जिसका समायोजन आचार्य कक्षा और शास्त्री कक्षा के पाठ्यक्रम में किया गया है।
- गृह विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि के स्वतंत्र पाठ्यक्रम निर्धारित हैं । पारम्परिक विषयों में शास्त्री एवं आचार्य स्तर पर वास्तुशास्त्र में प्राचीन नियमों के अनुसार तकनीकी दृष्टिकोण से नगरनिर्माण,गृहनिर्माण ,देवालय निर्माण तथा प्राकृतिक ऊर्जाओं के समावेशन के सभी पक्षों को बृहद्‌वास्तुमाला और समरांगणसूत्रधार में समझाया गया है, जो कि आचार्य स्तर पर अध्ययन के लिए निर्धारित है। शास्त्री के प्रथम वर्ष में निर्धारित अनिवार्य पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय विषयों में तथा कुमारसंभव, अभिज्ञानशाकुंतल आदि काव्यग्रन्थों में प्राकृतिक विचार के अवबोधन का समावेश किया गया है । पाठ्यक्रम में निर्धारित वराहमिहिर द्वारा रचित बृहत्‌संहिता पर्यावरण, धातुकर्म और जीवविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान , धातुविज्ञान, रत्नविज्ञान तथा प्रकृतिविज्ञान का कोषरूपग्रन्थ है।
- वेदनैरुक्तप्रक्रिया के अन्तर्गत आचार्यद्वितीयवर्ष में प्रथमप्रश्नपत्र में प्रायोगिक दृष्टि से गणितीय अनुप्रयोग हेतु शुल्बसूत्र का समावेश किया गया है । गणित के स्वतंत्र विषयक पाठ्यक्रम के साथ साथ शास्त्री में निर्धारित

भास्कराचार्यविरचित विश्वप्रसिद्ध गणितीय ग्रन्थ लीलावती, बीजगणित को पाठ्यक्रम में विन्यस्त हैं जिनमें अंकविन्यास से प्रारम्भ कर त्रैराशिकादि गणितीय नियमों का समावेश किया गया हैं साथ ही में अवकलन, समाकलन, त्रैराशिक, लघुरिक्थ, त्रिकोणमिति, ज्यामिति, दशमलव पद्धति का निवेश भी तथा आधुनिक गणित की दृष्टि से गतिविज्ञान एवं स्थिति विज्ञान के विषय भी पाठ्यांश में समाहित हैं । विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों के अनुसार छात्रों को गणित की विधि का ज्ञान प्रदान करने के साथ साथ ग्रहगणित कर विश्वस्तरीय दृक्सिद्धपंचाग का प्रकाशन भी करता है । गणित में अवकलन, समाकलन, गतिविज्ञान, भूभ्रमण, दीर्घवृत्त इत्यादि जैसे विषय आधुनिक गणित के विषय भी पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं ।

- प्राचीन राजशास्त्र अर्थशास्त्र शास्त्री पाठ्यक्रम में निर्धारित में कौटिलीय अर्थशास्त्र, शुक्रनीति, दंडनीति और कामन्दकनीति आदि ग्रन्थ विधि पर केन्द्रित हैं। किस प्रकार के कर्म के लिए किस प्रकार की नीति है इसका निदर्शन करने के उद्देश्य से पुराण के पाठ्यक्रम में वाल्मिकीय रामायण और महाभारत ग्रन्थ हैं। धर्मशास्त्र में याज्ञवल्यस्मृति, मनुस्मृति और तुलनात्मक दर्शन में अर्थशास्त्र, विधिशास्त्र के पक्षों को इसी उद्देश्यों से समाहित किया गया है। पाठ्यक्रम में वास्तुशास्त्र के माध्यम से भैतिकप्रबंधन और श्रीमद्भगवद्गीताके माध्यम से जीवनप्रबन्धन की अवधारणा प्रतिफलित है । ज्योतिष के आचार्यपाठ्यक्रम में निर्धारित समरांगणसूत्रधार और बृहत् संहिता नगर प्रबंधन और मंदिर प्रबंधन जैसे विषयों का पल्लवन करते हैं ।
- वनस्पति विज्ञान पाठ्यक्रम में स्वतंत्रतया विद्यमान हैं । अर्थववेद का प्राणसूक्त, पृथ्वीसूक्त ऋग्वेद का औषधि सूक्त, उषा सूक्त में वनस्पतियों में देवत्व का बोध कराता है। बृहत् संहिता में दकार्गलाध्याय वृक्ष आयुर्वेद पर अध्याय, वायु परीक्षा और सद्यः वृष्टि की विशेषताएं पाठ्यक्रम में अनिवार्य हैं। इसी प्रकार से साहित्य पाठ्यक्रम के शास्त्री प्रथम तथा द्वितीय वर्ष में अभिज्ञानशांकुन्तल, कुमारसम्भव और मेघदूत में पर्यावरण सम्बन्धित विषयों की अवधारण से छात्रों को अवगत कराया जाता है । ज्योतिष शास्त्र के आचार्य कक्षा के पाठ्यक्रम में निर्धारित बृहत्संहिता में वास्तुशास्त्र , दकार्गल (भूमिगत जल), वृक्षायुर्वेद के विषय पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं।
- ज्योतिष पाठ्यक्रम में आचार्य पाठ्यक्रम में निर्धारित बृहत्संहिता में आयुर्वेद के सिद्धांत तथा कृषिपाराशर के विषय सम्मिलित हैं। वृक्षायुर्वेदाध्याय, सस्यलक्षणाध्याय, वृष्टिलक्षणाध्याय वृष्टि के पूर्णज्ञान,फसलों की विशेषताओं,तेजी एवं मन्दी आयुर्वेद के पक्षों को समाहित करते हैं। वास्तुकला में बृहदवस्तुमाला और वास्तुरत्नाकर में पर किस प्रकार की भूमि ग्रह्य है? किस प्रकार कृषि कार्य करना है? इन नियमों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। भास्कर विरचित सिद्धांत शिरोमणि शास्त्रीय स्तर पर पाठ्यक्रम में निर्धारित है, छात्रों को खगोलीय गणित, भौतिक और रासायनिक विज्ञान का बोधन प्रदान करता है। होरा स्कन्ध के पाठ्यक्रम में चिकित्सा और मनोवैज्ञानिक पहलुओं का भी निवेश किया गया है ।
- व्याकरण में भाषा सिद्धांतों के शिक्षण में भाषाविज्ञान का भी निवेश किया जाता है। संगणकीय अनुवाद पद्धति के माध्यम से विभिन्न भाषाओं के वैज्ञानिक पहलुओं की चर्चा प्रदान कर अनुवाद और अन्य परियोजनाओं में छात्रों की प्रतिभा को मजबूत करने का भी प्रावधान है। शब्दकोशों और निरुक्तों के माध्यम से संस्कृत को

आधुनिक भाषाविज्ञान और संगणक के साथ प्रयोगात्मक रूप से कैसे एकीकृत किया जाए, इस दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। अष्टाध्यायी, अमरकोश और निरुक्त की शिक्षा में निहित संगणकीय पद्धति की अवधारणा का बोध कराया जाता है।

छात्र साहित्य पाठ्यक्रम में महाकाव्य,नाटक आदि आख्यानों का निवेश कर पाठ्यक्रम लोक कलाओं का भी पोषण करता है नाट्यमंचन द्वारा छात्रों में अभिनय कौशल विकसित करता है। कादंबरी किरातार्जुनीय, शिवराजविजय, मृच्छकटिक और शिशुपालवध जैसे ग्रन्थों के द्वारा समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, मानव व्यवहार विज्ञान और प्रबंधन में दक्षता प्रदान की जाती है । विश्वविद्यालय शास्त्री आचार्य की उपाधि के साथ साथ B.Lib, B.Voc, M.Voc, B.ed जैसे समसामयिक कार्यक्रम, ज्योतिष, वास्तु, कर्मकाण्ड, आंतरिक सज्जा, पत्रकारिता विषयक प्रमाणपत्रीय,संगीतादि डिप्लोमा के पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है। अभिनव पाठ्यक्रमों के क्रम में विश्वविद्यालय के ऑनलाइन संस्कृत प्रशिक्षण केंद्र द्वारा सरल मानक संस्कृत शिक्षण, कर्मकांड, वास्तु, ज्योतिष, योग, दर्शन और वेदांत आदि दस विषयों में त्रैमासिक, षाण्मासिक और वार्षिक पाठ्यक्रम स्वीकृत किए गए हैं। ऑनलाईन ३० कार्यक्रमों में सरल मानक संस्कृत के माध्यम से ६०० से अधिक अध्येता पंजीकृत हैं। आधुनिक ज्ञानप्राली का समावेश करते हुए हिंदू अध्ययन, एम.ए. योग पाठ्यक्रम भी नवीनतया प्रारंभ किए गए हैं। वर्तमान में भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र द्वारा पारंपरिक साहित्य ६४कलाओं पर शोध भी निर्धारित है। विश्वविद्यालय दीवार प्रबंधन और कार्य कुशलता पर पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये गए हैं ।

1.2.1Q1M संस्थया प्रस्तुतेषु सर्वेषु विविधायामवत्सु पाठ्यक्रमेषु (वैज्ञानिक-प्रौद्योगिक-साहित्यसमाश्रयेण शास्त्री/ बी.एस्.सी-प्रभृतिपारम्परिकाधुनिकोपाधिनाम्ना योगशास्त्रस्य प्राचीन-आधुनिकगणितयोः/ अर्थशास्त्रस्य/ प्रबन्धनशास्त्रस्य/ विधिशास्त्रस्य/ सङ्गणकीयविज्ञानस्य/ आयुर्वेदसिद्धान्तस्य (दर्शनस्य)/ कृषिपाराशरस्य/ वृक्षायुर्वेदस्य च सङ्घटनेन समारब्धाः नवीनपाठ्यक्रमाः तथा उदयमानविषयकपाठ्यक्रमाः/ संस्कृताश्रितपाठ्यक्रमाः) अभिनवपाठ्यक्रमाः।

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये सर्वेषु स्नातकस्तरीयेषु स्नातकोत्तरीयस्तरेषु च प्राचीनशास्त्रीयविषयैः सह आधुनिकविषयाणामपि सन्निवेशः कृतः विद्यते। तत्र भागद्वयं मुख्यतया विद्यते। एकत्र तु स्वतंत्रतया अर्वाचीनविषयाः मुख्यरूपेण स्वतंत्रविषयरूपेण सम्बद्धः पुनश्च केचन विषयाः ऐच्छिकताया समाविष्टाः। विशिष्य च संस्कृतशास्त्रीयग्रन्थेषु अन्तर्विषयिणीं पद्धतिमनुसृत्य आधुनिकविषयाणां समावेशः विद्यते ।

- शास्त्रिस्तरे वेदवेदांसंकायान्तर्गते ज्योतिषविषकपाठ्यक्रमे खगोलीयविषयाणामध्ययनाय अनुसन्धानाय च आधुनिकयन्त्रालयः अर्वाचीनपद्धत्या छात्रान् प्रेरयति तथैव प्रस्तरवेधशालायां एकादशयन्त्राणि वैज्ञनिकीं पद्धतिं सम्पोषयति। शास्त्रिप्रथमवर्षे सिद्धान्तज्यौतिषविषये चतुर्थप्रश्नपत्रे गोलपरिभाषा निर्धारिता विद्यते , द्वितीयवर्षे च पंचमपत्रे चापीयत्रिकोणमितिः प्राचीनाधुनिकगणितयो समन्वयं द्योतयति। ज्योतिषविषयस्य पाठ्यक्रमे सिद्धान्तशिरोमणौ आकर्षणसिद्धान्तःप्रतिपादितः वर्तते तथैव आर्यभटीये भूभ्रमणसिद्धान्तः वैज्ञानिकरीत्या संकेतितः अस्ति यस्य निवेशः आचार्यकक्षायाः शास्त्रिकक्षायाश्च पाठ्यक्रमे वरीवर्ति ।
- गृहविज्ञानम्, वनस्पतिविज्ञानम् प्रभृतयः विषयाः ज्योतिषविषयस्य आचार्यकक्षायाः पाठ्यक्रमे निर्धारिते बृहत्संहिताग्रंथे वर्तते। वास्तुशास्त्रे प्राचीननियमानुसारेण प्रौद्योगिकदृष्ट्या गृहस्य निमार्णविषये सर्वे पक्षाः बृहत्संहितायाम्, बृहद्वास्तुमालायां समरांगणसूत्रधारे च प्रतिपादितास्सन्ति यस्याध्ययनं आचार्यस्तरे विधीयते । शास्त्रिप्रथमवर्षे निर्धारिते अनिवार्यपाठ्यक्रमे कुमारसम्भवे अभिज्ञानशाकुन्तले च पर्यावरणसम्बन्धिनो विषयाः प्राकृतिकचिन्तनसामग्रयश्च गुम्फिताः सन्ति। वराहमिहिररचिता बृहत्संहिता पर्यावरण-धातु-जीवविज्ञाननां कोषरूपा विद्यते।
- शास्त्रिस्तरे आचार्यस्तरे च सांख्ययोगपाठ्यक्रमे तुलनात्मकदर्शने च योगसूत्रम् सैद्धान्तिकतया प्रायोगिकदृष्ट्या च पाठ्यते । योगविज्ञानस्य कृते श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थः अपि पाठ्यक्रमे निर्धारिता वर्तते यत्र भक्तिकर्मज्ञानयोगाानां अध्यापनं छात्राणां कृते विधीयते । योगपाठ्यक्रमः ऑनलाइन केन्द्र पक्षतः योगविषक डिप्लोमा प्रदीयते।
- ज्योतिषीयपाठ्यक्रमे लीलावती-बीजगणित-रेखागणित-ज्यामिति-त्रिकोणमिति-भाभ्रमलघुरिक्थविषयाणां अध्ययनं विधीयते तत्र आधुनिकप्राचीनगणितयोः समन्वयः पाठ्यक्रमे वर्तते। पाठ्यक्रमे निर्धारितग्रन्थानुसारं सूर्यसिद्धान्तदृशा ग्रहगणितं विधाय पंचागमपि विश्वविद्यालयः प्रकाशयति गणितपद्धतिं च छात्रान् अवबोधयति । अवकलन-समाकलन-गतिविज्ञान-भूभ्रमण-दीर्घवृत्तप्रभृतयः विषयाः ज्यातिषीयपाठ्यक्रमे किं च स्वतन्त्रतया गणितविषयपाठ्यक्रमेपि निर्धारितास्सन्ति ।

- वनस्पतिविज्ञानपाठ्यक्रमे-वृक्षवनस्पतिविषयानां निवेशः कृतः विद्यते। बृहत्संहितायाम् दकार्गलाध्यायः,वृक्षायुर्वेदाध्यायः,पवनपरीक्षा,सद्योवृष्टिलक्षणमिति विषयाः पाठ्यक्रमे अनिवार्यतया विद्यन्त एव तथैव साहित्यपाठ्यक्रमे शास्त्रिद्वितीयवर्षे कुमारसम्भवम् मेघदूतं च पर्यावरणविषयान् सूचयतः।
- श्रीमद्भगवद्गीता पाठ्यक्रमे बहुषु स्थलेषु निर्धारिता वर्तते। तत्र पाठ्यक्रमे निर्धारिते वास्तुशास्त्रे प्रबन्धनशास्त्रस्य जीवनदर्शनस्य च अवधारणा विद्यते। समरांगणसूत्रधारे बृहत्संहितायां च नगरप्रबन्धनम्, देवालयप्रबन्धनम् इत्यादयः विषयाः समासीकृतास्सन्ति । स च ग्रन्थः ज्योतिषस्य पाठ्यक्रमे निर्धारितः विद्यते ।
- प्राचीनराजशास्त्र -अर्थशास्त्र पाठ्यक्रमे कौटलीयार्थशास्त्रम, शुक्रनीतिः, दण्डनीतिः, कामन्दकनीतिः इति ग्रन्थाः विधिविषये प्रबोधयन्ति । पुराणपाठ्यक्रमे वाल्मीकिरामायणम् महाभारतं च एतद्विषये महत्त्वपूर्णं विद्यते । धर्मशास्त्रे याज्ञवल्वयस्मृतेः व्यवहारमयूखे मनुस्मृतौ तुलनात्मकधर्मदर्शने च पाठ्यक्रमे अर्थशास्त्रविधिशास्त्रदीनां निवेशः वर्तते।
- ज्योतिषपाठ्यक्रमे आचार्ये बृहत्संहितायां आयुर्वेदसिद्धांताः कृषिपाराशरस्य विषयाश्च समाहिताः सन्ति। तत्र वृक्षायुर्वेदाध्यायः, सस्यलक्षणाध्यायः, दकार्गलाध्यायश्च आयुर्वेदविषयकं पक्षं परिपोषयन्ति । वास्तुशास्त्रे कीदृग्भूमौ कया रीत्या कृषिकर्मकर्तव्यमिति धिया नियमाः बृहद्वास्तुमालायां वास्तुरत्नाकरे च आचार्यस्तरे पाठ्यक्रमे निवेशिताः सन्ति। शास्त्रिस्तरे पाठ्यक्रमे निर्धारिता भास्करप्रणीता सिद्धान्तशिरोमणिः छात्रान् खगोलीयं गणितं भौतिकं रासायनिकञ्च विज्ञानं बोधयति। होरास्कन्धे च चिकित्सा-मनोविज्ञानपक्षाणामालम्बनं पाठ्यक्रमे कृतं विद्यते। वैदिकविषयाणां पाठ्यक्रमे च संहितादिग्रन्थेषु मूलरूपेण वैदिकविज्ञानं बोध्यते तथैव आरण्यकगृह्यसूत्रादिग्रन्थेषु मानवव्यवहारशास्त्रमभिलक्ष्य सर्वेऽपि विषयाः सन्निविष्टाः सन्ति।
- व्याकरणविषये भाषाविषयकाः सिद्धान्ताः पाठ्यन्ते तत्र भाषाविज्ञानस्य निवेशः अपि कृतः वर्तते। अनुवादपद्धत्या च विविधानां भाषाणां वैज्ञानिकपक्षाणां स्परूपविमर्शनं विधाय अनुवादादिषु प्रकल्पेषु छात्राणां प्रतिभायाः दृढीकरणं पाठ्यक्रमेण विधीयते। कोश-निरूक्तादिमाध्यमेन आधुनिकभाषाविज्ञानेन संगणकेन च संस्कृतभाषायाः कथं प्रायोगिकदृष्ट्या समन्वयः

भवेदित्यपि पाठ्यचर्यायाः अनिवार्यविषयाः सन्ति। तत्र अष्टाध्यायी-अमरकोष-निरूक्तग्रन्थानां संगणकीयदृष्ट्या एव गणितीयरीत्या अध्यापनं विधीयते ।

- आधुनिकोपाधिवत् ग्रन्थालय-पत्रकारिता-राजशास्त्र-अर्थशास्त्रप्रभृतीनां स्वतंत्रतया पाठ्यक्रमानां निवेशोस्ति। दीनदयालउपाध्यायकौशलकेन्द्रपक्षतः B.VOC , M.VOC प्रभृतया पाठ्यक्रमा सन्ति।
- शिक्षाशास्त्रिविभागद्वारा B.ed पाठ्यक्रमाः, ग्रन्थालयसूचनाविज्ञानविभागतः B.Lib,M.Lib, -पत्रकारिताप्रभृतयः पाठ्यक्रमाः प्रचलिताः सन्ति। साहित्यसंस्कृतिसंकायतश्च संगीतडिप्लोमा उपाधयः प्रदीयन्ते।
- ऑनलाइनपाठ्यक्रमाः- दशसु विषयेषु ऑनलाइनसंस्कृतप्रशिक्षणकेन्द्रद्वारा त्रैमासिकाः, षाण्मासिकाः वार्षिकाश्च पाठ्यक्रमाः यथा सरलमानसंस्कृतशिक्षणम्, कर्मकाण्डः, वास्तु, ज्योतिषम्, योगः, दर्शनम्, वेदान्तः इत्येतेषु दशविषयाः स्वीकृताः सन्ति यत्र ३० कार्यक्रमाः सरलमानकसंस्कृतेन प्रचलिताः वर्तन्ते येन ८०० छात्राः लाभन्विताः सन्ति ।
- साहित्यशास्त्रे च पाठ्यक्रमे महाकाव्यदीनां माध्यमेन लोककलानां परिपोषणं पुनश्च नाटकादीनाभभिमञ्चनेन छात्रेषु अभिनयकौशल विकासः पाठ्यक्रमेन सम्पाद्यते। कादम्बरी-मृच्छकटिकम् – शिशुपालवधम् इति शास्त्रिकक्षायां निर्धारितैः पाठ्यक्रमांशैः समाजशास्त्र-राजनीतिशास्त्र- मानवव्यवहारशास्त्र-प्रबन्धनादिविषये च दक्षता छात्रेषु उपपाद्यते।
- आधुनिकविषयाणामसमायोजनेन विश्वविद्यालयद्वारा नूतनाः अभिनवाः पाठ्यक्रमाः हिन्दूअध्ययनम्, योगदर्शनं च प्रारब्धम। सम्प्रति भारतीयज्ञानपरम्पराकेन्द्रपक्षतः अपि पारम्परिकसाहित्य ६४कलानां विषये अनुसंधानं विधीयते। विश्वविद्यालयः देवालप्रबन्धनम्, कथादक्षता विषयकान् पाठ्यक्रमान् समारब्धुम् उद्यतोस्ति।

पाठ्यक्रम में आधुनिक पाठ्यांश समावेश

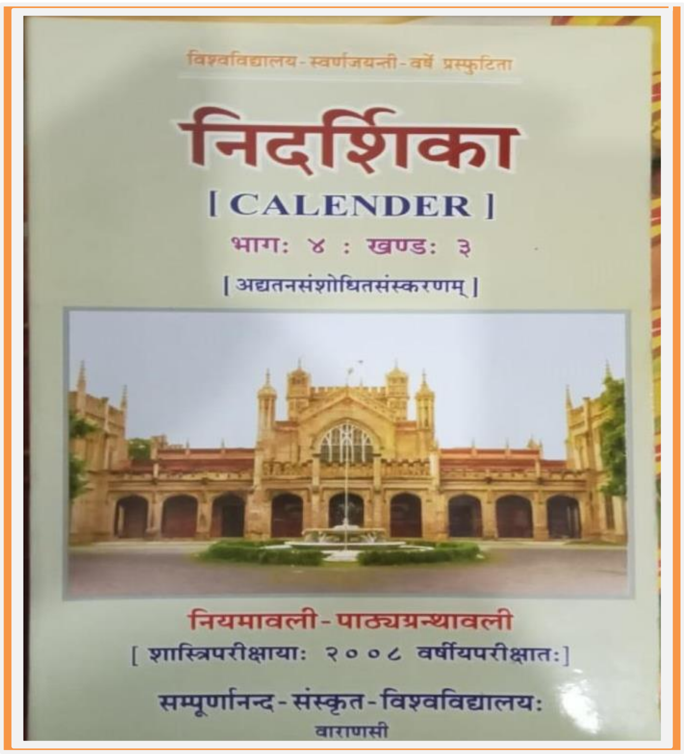

- अर्थशास्त्र
- प्रबन्ध शास्त्र
- कानून शास्त्र
- कंप्यूटर विज्ञान
- आयुर्वेद सिद्धांत
- कृषि पाराशर एवं वृक्षायुर्वेद
- वैज्ञानिक

वैकल्पिक विषयः 'ख' वर्गः

(निम्नलिखितेषु खवर्गान्तर्गतैकस्य विषयस्य ग्रहणमनिवार्यम्)

१. राजशास्त्रम्, २. अर्थशास्त्रम्, ३. इतिहासः, ४. प्राचीन-भारतीयेतिहासः संस्कृतिश्च, ५. भूगोलः, ६. हिन्दीभाषा, ७. नेपालीभाषा, ८. पालिः, ९. प्राकृतम्, १०. प्राचीनभारतीय-राजनीतिः, ११. विज्ञानम्, (रसायनविज्ञानम्, जीवविज्ञानम्, भौतिकविज्ञानम्,) १२. तुलनात्मकदर्शनम्, १३. समाजशास्त्रम्, १४. भाषाविज्ञानम्, १५. गृहविज्ञानम्, (केवलं बालिकानां कृते) १६. इतिहासपुराणम्, १७. कन्नड़भाषा।

https://ssvv.ac.in/syllabus

पाठ्यक्रम में समाहित आधुनिक विषयों के पाठ्यांश

भौतिक विज्ञान

भौतिक विज्ञान

(वनस्पति विज्ञान के विकल्प में)

सैद्धान्तिक ७०

इकाइयाँ एवं विमाएँ। अदिश एवं सदिश राशि तथा उनके योग और घटाना, प्रक्षेप गति। वृत्तीय गति, दृढ़पिण्डकी घूर्णन गति, सार्वयिक गुरुत्वाकर्षण, केप्लर का नियम, गुरुत्वाकर्षण का नियम, गुरुत्वीय स्थितिज ऊर्जा, पलायन वेग, संयुक्त दोलक, गैसों का अणुगति सिद्धान्त, वायल चार्ल्स का नियम, गैससमीकरण, द्रवों तथा ठोसों में अणुगति प्रत्यास्थता, हुक का नियम, पृष्ठतनाव, ससंजक तथा असंजक बल, पृष्ठतनाव की अन्तराणविक बलों के आधार पर व्याख्या, द्रवों का प्रवाह, आदर्श द्रव धारा रेखी प्रवाह, वर्नोली का प्रमेय एवं उसके अनुप्रयोग।

गणितविज्ञान

२७. गणितम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् १००

(अ) बीजगणिते—आंशिकभिन्नम्, सरलं विततभिन्नम् असमताः, श्रेणीनां संमृतेः सामान्यज्ञानम्, सरलं सारणिकम्, समीकरणानां मीमांसा। ४०

(आ) त्रिकोणमितौ—उत्क्रमत्रिकोणमितिकफलानि, द माइवर प्रमेयस्यतत्प्रयोगाश्च, वृत्तीयानि अतिपरवलीयानि लघुकणकीयानि च फलानि, त्रैकोणमितिकश्रेणीनां योगः, त्रैकोणमितिकफलानां विस्तारः। ६०

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् १००

(अ) अव्यक्तज्यामितौ—आयताकारैस्तिर्यग्भिः कोणीयैश्च नियामकैः सरल-रेखाः, वृत्तम्, दीर्घवृत्तमतिपरवलयश्च; व्यापकवर्ग-समीकरणम्, शाङ्कवसंहतिः समानाभिशांकवाश्च। ६०

(आ) धन—ज्यामितौ-सरलरेखाः समतलम्, गोलश्च। ४०

षष्ठं प्रश्नपत्रम् १००

चलनकलने—सीमाः सातत्यम्, अवकलनशीलता, उत्तरोत्तरमवकलनम्, लाइवनेज-प्रमेयः, फलानां प्रसारः, अनिर्णीतरूपाणि, आंशिकोऽवलगुणकः, एकस्य चलराशेर्भूयिष्ठाल्पिष्ठविन्दवः, वक्राणां स्पर्शयोऽभिलम्बाश्च वक्रता, कोषः केन्द्रजा, उन्नतोदरत्वम् नतोदरत्वम्, नतिबिन्दवः, बहुलकबिन्दुः, वक्रालेखः।

वनस्पति विज्ञान

पाठ्यपुस्तकें

१. कालेज बाटनी (Vol. I, II & III)—एच.सी. गांगुली एवं ए.के. कार, न्यू सेन्ट्रल बुक एजेन्सी, कलकत्ता।

२. बाटनी फार डिग्री स्टुडेन्ट्स (Vol. I, II, III, IV & V)—वी.आर. वशिष्ठा, एस. चन्द्र एण्ड कम्पनी लिमिटेड, रामनगर, नई दिल्ली।

३. बाटनी फार डिग्री स्टूडेन्ट्स—एस.सी. दत्ता, कलकत्ता आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

४. साइटोलाजी, जेनेटिक्स एण्ड इवोलुसन—पी.के. गुप्ता, रस्तोगी पब्लिकेशन, शिवाजी रोड, मेरठ।

५. दी पिनग्यून डिक्सेनरी आफ बायोलाजी—हाजेल वाटनस एण्ड बीने लिमिटेड, ग्रेट ब्रिटेन।

अर्थशास्त्र

६. ब्रिटिश

२. अर्थशास्त्र

१००

सप्तम प्रश्नपत्र

अर्थशास्त्र की परिभाषा व क्षेत्र, अर्थशास्त्र के नियम व उनके स्वभाव, अर्थशास्त्र के अध्ययन की रीतियाँ।

उदासीनता, वक्ररेखा तथा प्रतिस्थापन की सीमान्त दर, (Indifference curves and marginal rate of substitution) माँग का नियम, माँग की रेखा की अधोगति (Downword Slope of Demand Gurva) माँग की लोच की माप, उपभोक्ता की बचत, उपभोक्ता की सार्वभौमता (Sovereignty of the Gonsumer).

उद्योगों का स्थानीयकरण व विकेन्द्रीकरण, श्रम-विभाजन, बड़े पैमाने पर उत्पादन के लाभ व सीमायें, उत्पादन के नियम, बुद्धिमान्, ह्रासमन व समान उत्पादन के नियम, उत्पादन में प्रतिस्थापन का नियम।

संस्कृत ज्ञान परम्परा में विज्ञान

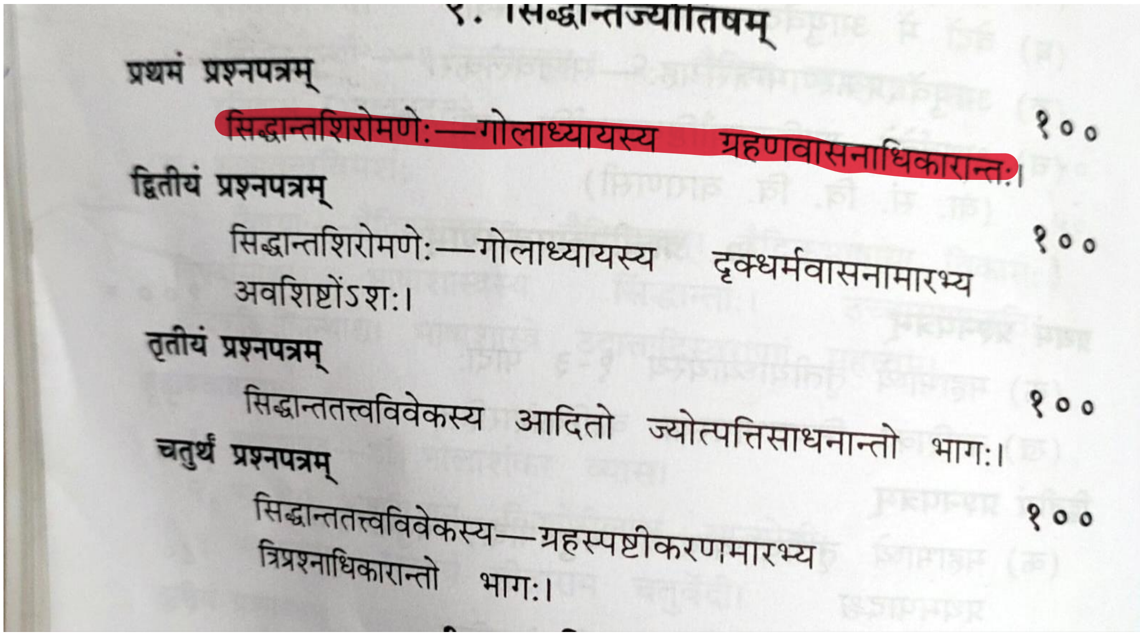

९. सिद्धान्तज्योतिषम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम्

सिद्धान्तशिरोमणेः—गोलाध्यायस्य ग्रहणवासनाधिकारान्तः। १००

द्वितीयं प्रश्नपत्रम्

सिद्धान्तशिरोमणेः—गोलाध्यायस्य दृक्धर्मवासनामारभ्य अवशिष्टोंऽशः। १००

तृतीयं प्रश्नपत्रम्

सिद्धान्ततत्त्वविवेकस्य आदितो ज्योत्पत्तिसाधनान्तो भागः। १००

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्

सिद्धान्ततत्त्वविवेकस्य—ग्रहस्पष्टीकरणमारभ्य त्रिप्रश्नाधिकारान्तो भागः। १००

आकर्षणसिद्धान्त

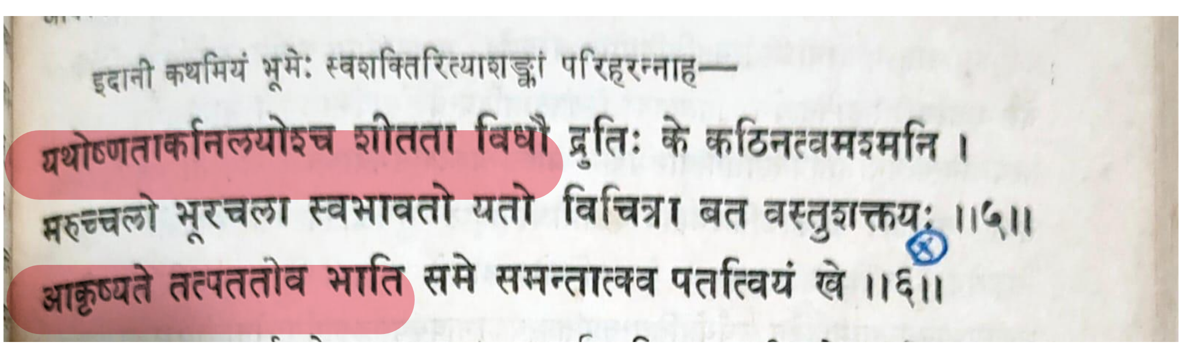

इदानी कथमियं भूमेः स्वशक्तिरित्याशङ्क्य परिहरन्नाह—

यथोष्णतार्कानलयोश्च शीतता विधौ द्रुतिः के कठिनत्वमश्मनि ।
मरुच्चलो भूरचला स्वभावतो यतो विचित्रा बत वस्तुशक्तयः ॥५॥
आकृष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात्क्व पतत्वियं खे ॥६॥

10

ASTRONOMY

ORBITING PLANETS ---

concepts of gravitation

आकृष्टिशक्तिश्च मही तया खस्थं
गुरु स्वाभिमुखं स्वशक्त्या।
आकृष्यते तत्पततीव भाति समे
समन्तात् क्व पतत्वियं खे।।

सिद्धान्तशिरोमणि-भुवनकोशः-६
528CE

... celestial bodies are attracted ... towards theearth by her own (gravitational) force, and they appear to fall as a result of such attraction, but when equal forces act on a body in space from all sides how can it fall?

(SIDDHANTA-SHIROMANI - BHUVANAKOSHA - 6)
(528 AD)

The universal law of gravitation was propounded by Issac Newton (1642-1727 CE) much later.

Samskrita Bharati

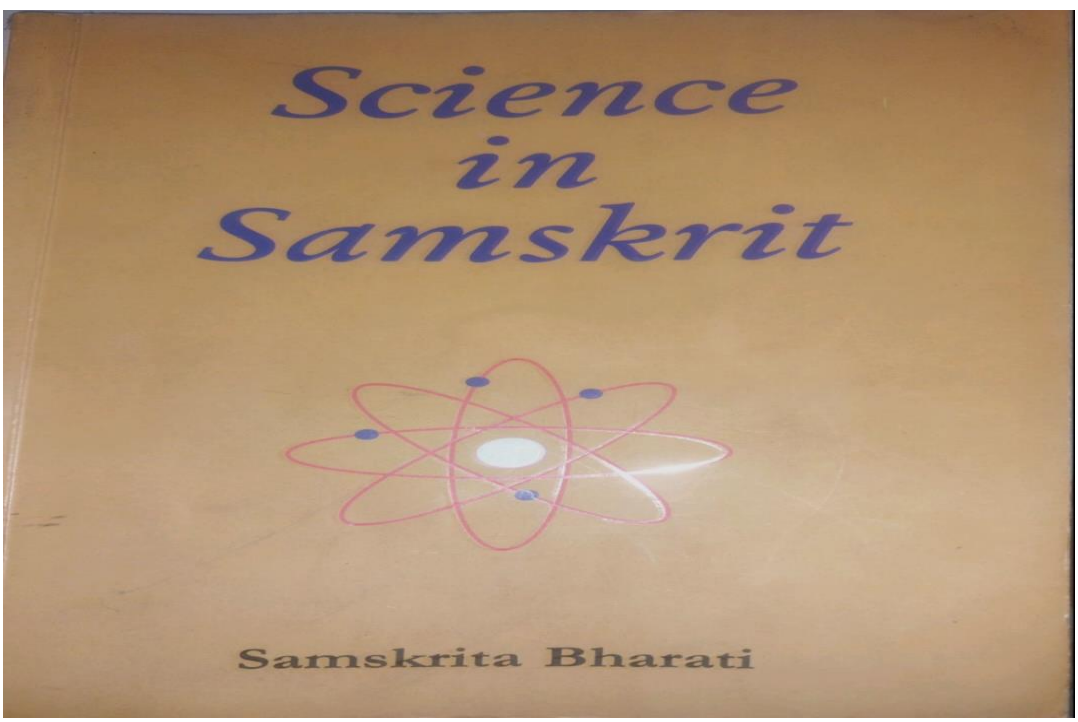

सन्दर्भित ग्रन्थों में वैज्ञानिक पाठ्यांश

संस्कृत ज्ञान परम्परा में तकनीकि

१. सिद्धान्तज्योतिषम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम्

सिद्धान्तशिरोमणेः—गोलाध्यायस्य ग्रहणवासनाधिकारान्तः। १००

द्वितीयं प्रश्नपत्रम्

सिद्धान्तशिरोमणेः—गोलाध्यायस्य दृक्धर्मवासनामारभ्य अवशिष्टोंऽशः। १००

तृतीयं प्रश्नपत्रम्

सिद्धान्ततत्त्वविवेकस्य आदितो ज्योत्पत्तिसाधनान्तो भागः। १००

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्

सिद्धान्ततत्त्वविवेकस्य—ग्रहस्पष्टीकरणमारभ्य त्रिप्रश्नाधिकारान्तो भागः। १००

अथ यन्त्राध्यायः

अथ यन्त्राध्यायो व्याख्यायते। तत्राऽऽदौ तदारम्भप्रयोजनमाह—

दिनगतकालावयवा ज्ञातुमशक्या यतो विना यन्त्रैः।
वक्ष्ये यन्त्राणि ततः स्फुटानि संक्षेपतः कतिचित् ॥१॥
गोलो नाडीवलयं यष्टिः शङ्कुर्घटी चक्रम्।
चापं तुर्यं फलकं धीरेकं पारमार्थिकं यन्त्रम् ॥२॥

संस्कृत ज्ञान परम्परा में प्राचीन आधुनिक गणित समन्वय

शास्त्री प्रथमखण्डः २७

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् १००

(क) सरलत्रिकोणमिति परिशिष्ट सहिता म. म. बापूदेव शास्त्रिकृता, प्रकाशक—सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी। ७०

(ख) अर्बाचीनं ज्यौतिषम्—पृथ्वी, कालविभागाः, चन्द्रः, सूर्य, ग्रहणमाच्छादनं सक्रमणं च ग्रहविषयकाः सिद्धान्ताः, भ्रहाः धूमकेतवः, उल्काश्च) १-८ अध्याया, प्रकाशकः— सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय। ३०

षष्ठं प्रश्नपत्रम् १००

(क) त्रिकोणमितिः—म.म. बापूदेवशास्त्रिरचितः ६०

(ख) नवीनसरलमितेः १-४ अध्यायाः श्रीबलदेवमिश्र सम्पादिता ४०

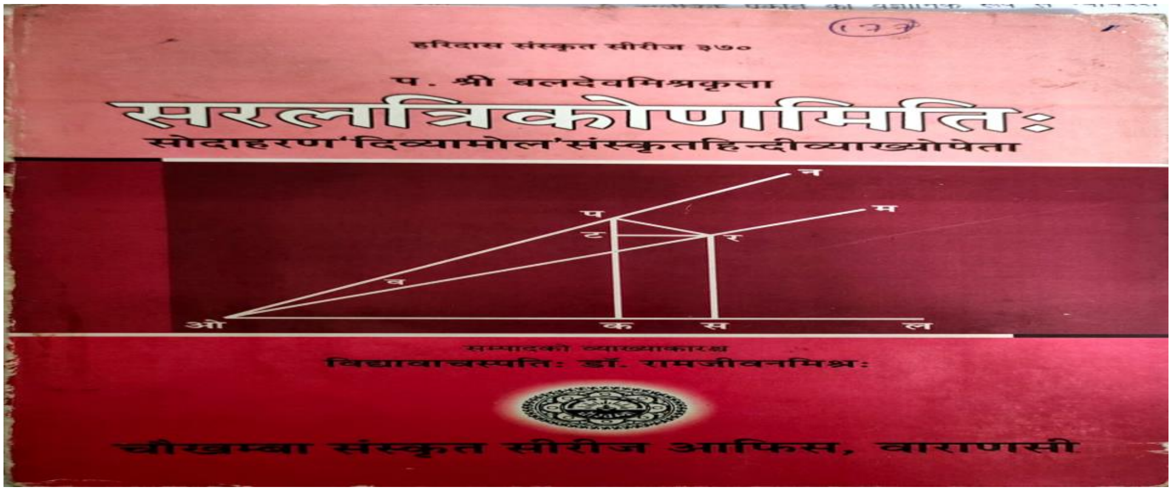

अष्टमाध्यायः ३०५

दोः कोटिजीवाविवरस्य वर्गो दलीकृतस्तस्य पदेन तुल्या। स्यात् कोटिबाह्वोर्विवरार्धजीवा वक्ष्येऽथ मूलग्रहणं विनाऽपि।।

अमोल—ज्या तथा कोटिज्या के अन्तर के वर्ग के आधे का वर्गमूल बाहु तथा उसकी कोटि के अन्तर के आधे की ज्या होती है।

अतः, सूत्रानुसार—

$$\left(\frac{\text{कोटि} - \text{भुज}}{२}\right)$$

$$= \sqrt{\left(\frac{\text{कोज्या भु} - \text{ज्या भु}}{४}\right)^२} \text{ इत्युपपन्नम् ।}$$

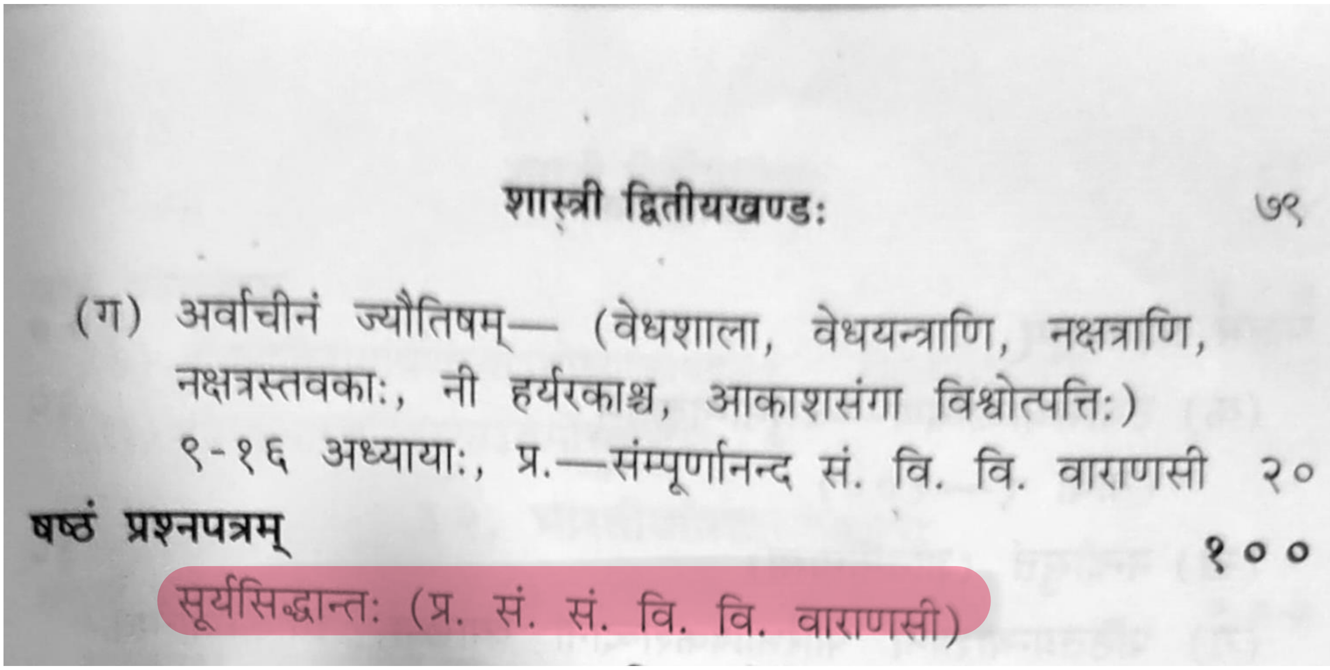

(ग) अर्वाचीनं ज्यौतिषम्— (वेधशाला, वेधयन्त्राणि, नक्षत्राणि, नक्षत्रस्तवकाः, नी हर्यरकाश्च, आकाशसंगा विश्वोत्पत्तिः)
९-१६ अध्यायाः, प्र.—संम्पूर्णानन्द सं. वि. वि. वाराणसी २०

षष्ठं प्रश्नपत्रम् १००

सूर्यसिद्धान्तः (प्र. सं. सं. वि. वि. वाराणसी)

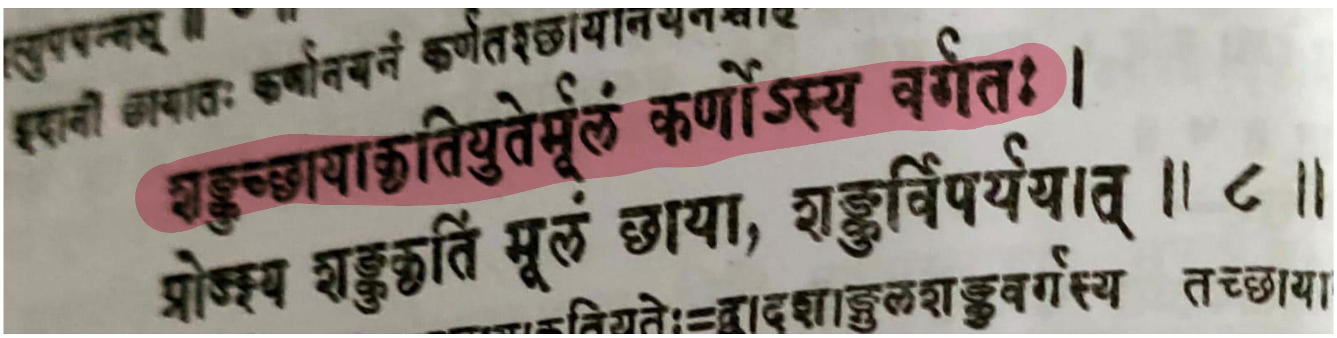

इदानीं छायातः कर्णानयनं कर्णतश्छायानयनञ्चाह

शङ्कुच्छायाकृतियुतेर्मूलं कर्णोऽस्य वर्गतः ।
प्रोज्झ्य शङ्कुकृतिं मूलं छाया, शङ्कुर्विपर्ययात् ॥ ८ ॥

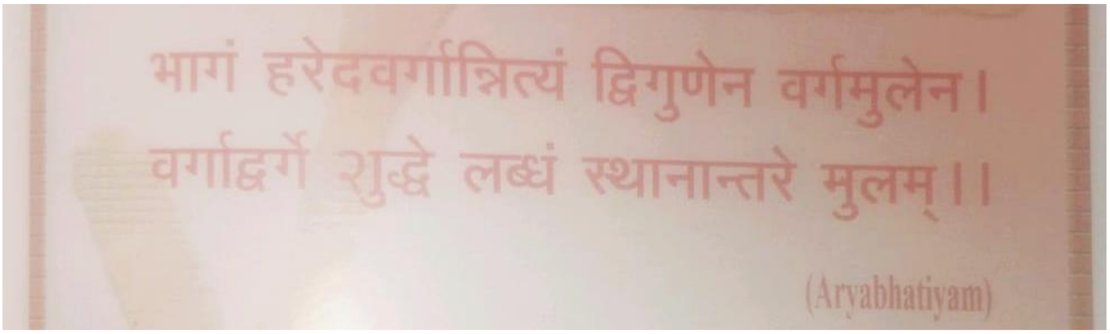
भागं हरेदवर्गान्नित्यं द्विगुणेन वर्गमुलेन।
वर्गाद्वर्गे शुद्धे लब्धं स्थानान्तरे मुलम्।।

(Aryabhatiyam)

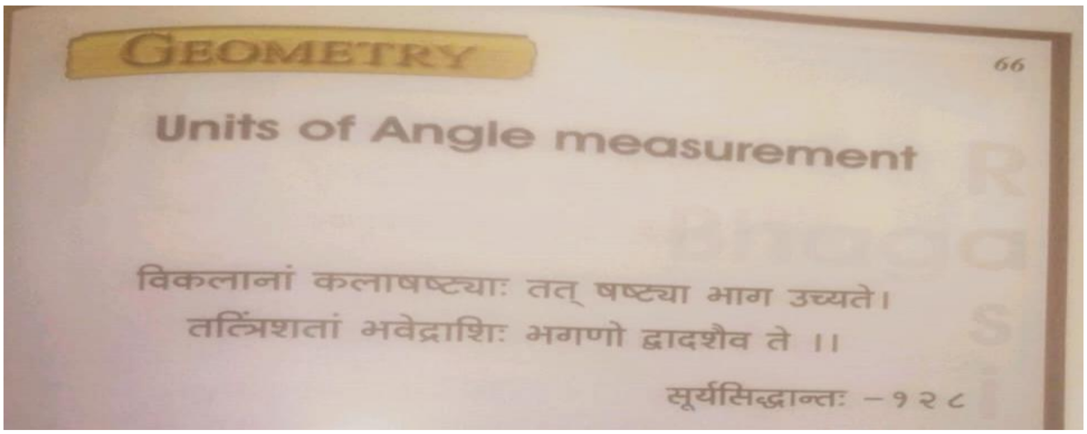
GEOMETRY 66

Units of Angle measurement

विकलानां कलाषष्ट्याः तत् षष्ट्या भाग उच्यते।
तत्त्रिंशतां भवेद्राशिः भगणो द्वादशैव ते ।।

सूर्यसिद्धान्तः –१२८

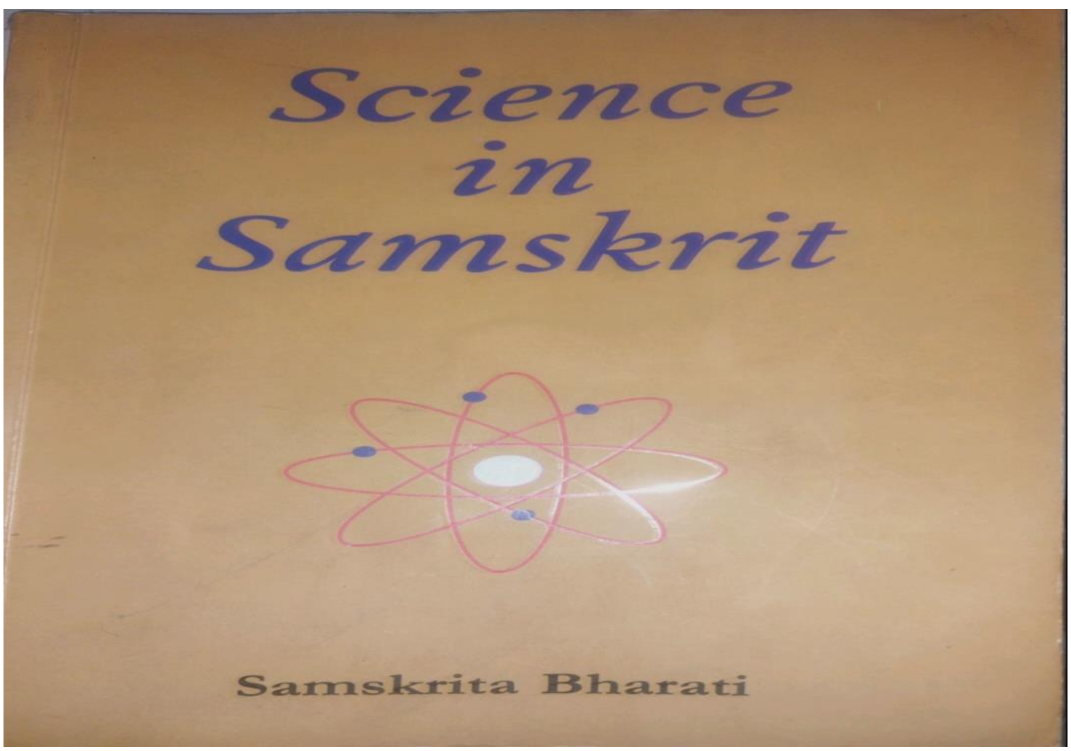

सन्दर्भित ग्रन्थों में गणितीय पाठ्यांश

संस्कृत ज्ञान परम्परा में अर्थशास्त्र

१६. प्राचीन-राजशास्त्रार्थशास्त्रम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम्	१००
कौटलीयार्थशास्त्रस्य प्रथमाधिकरणम् (जयमङ्गलाटीकासहितः)	
द्वितीयं प्रश्नपत्रम्	१००
कामन्दकीय नीतिसारः (१३-२० सर्गपर्यन्तम्) (जयमङ्गलाटीकासहितः)	
तृतीयं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) याज्ञवल्क्यस्मृतेः राजधर्मप्रकरणम् मिताक्षरासहितम्	५०
(ख) मनुस्मृतेः राजधर्मप्रकरणम्	५०
चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) शुक्रनीतिः (राजशास्त्रार्थशास्त्रविषयाः)	७०
(ख) राजनीति-मयूखः	३०

अर्थशास्त्र-प्रयोजनम्

अर्थशास्त्रारम्भस्य प्रयोजनं किमिति चेदुच्यते। स्थापितेऽपि लोकतन्त्रे लोकमतं शासनसञ्चालनायापेक्षितं स्वयमेव न प्राप्यते। तत् कथञ्चित् प्राप्तमपि अचिरादेवानुकूलं भवति सत्वस्य शीलस्य चाभावे। तथा सति स्तब्धता, मानः, परस्परविरुद्धार्थकबुद्धीनामव्यवधानेनोत्पत्तिरूपा चपलता च नैयत्येन भवति। एतेषु दोषेषु समुद्भूतेषु सत्सु भ्रान्तिप्रमादविप्रलिप्सादयो दोषाः स्वयमेवोत्पद्यन्ते। तेन लोकमतं प्रतिकूलं भवति। नियतफलप्राप्तिरपि शास्त्रमन्तरा न भवितुमर्हति, सन्दिग्धे फले प्रवृत्तिर्नीत्यपसिद्धान्तः। अतः फलप्रमाज्ञानार्थं शास्त्रारम्भस्य आवश्यकता। शास्त्रप्रसूतं ज्ञानं पूर्वपरम्परया सर्वज्ञेश्वरात् प्राप्तं यत् तदेव ज्ञानं यद्यस्मन्निष्ठं भवति तदा तत्र नित्यज्ञानावृत्तिविषयताशून्यत्वरूपं प्रमात्वमक्षुण्णं भवति।

संस्कृत ज्ञान परम्परा में सामाजिक प्रबन्धन

४०

६. वेदनैरुक्तप्रक्रिया

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् १००

वेदाङ्गगृह्यकल्पाध्ययनम्—

(क) पारस्करगृह्यसूत्रम् ३५

(ख) कौशिकगृह्यसूत्रम् ३०

(ग) आश्वलायनगृह्यसूत्रम् ३५

एषां ग्रन्थानां सामान्यतया सूत्रार्थः कर्मपरिचयः परिभाषिक-शब्दार्थश्चापक्षितः।

ओ३म् सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ।
ोम आत्मा छन्दांस्यङ्गानि यजूँषि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं
पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत॥ यजु० १२.४

संस्कृत ज्ञान परम्परा में राजनैतिक प्रबन्धन

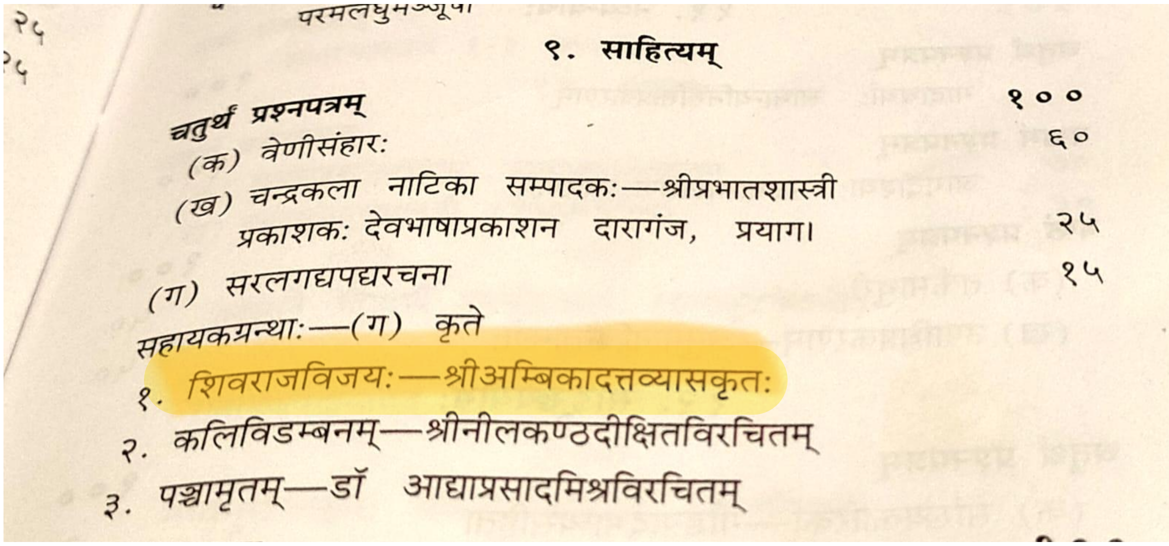

परमलघुमञ्जूषा

९. साहित्यम्

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् — १००

(क) वेणीसंहार: — ६०

(ख) चन्द्रकला नाटिका सम्पादक:—श्रीप्रभातशास्त्री
प्रकाशक: देवभाषाप्रकाशन दारागंज, प्रयाग। — २५

(ग) सरलगद्यपद्यरचना — १५

सहायकग्रन्था:—(ग) कृते

१. शिवराजविजय:—श्रीअम्बिकादत्तव्यासकृत:

२. कलिविडम्बनम्—श्रीनीलकण्ठदीक्षितविरचितम्

३. पञ्चामृतम्—डॉ आद्याप्रसादमिश्रविरचितम्

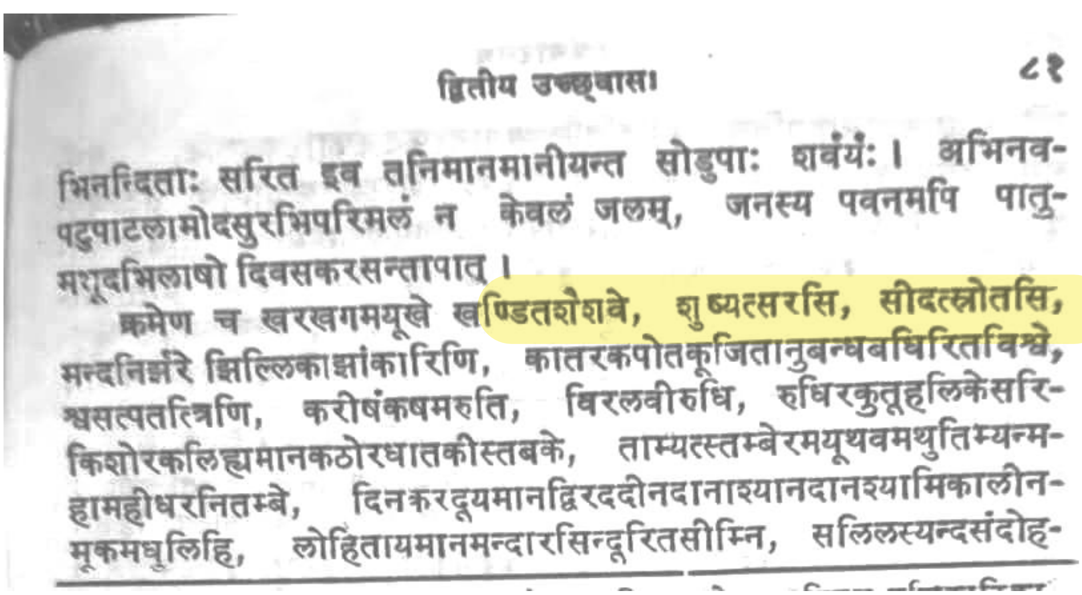

द्वितीय उच्छ्वास। ८१

भिनन्दिता: सरित इव तनिमानमानीयन्त सोडुपा: शर्वर्य:। अभिनवपट्टपाटलामोदसुरभिपरिमलं न केवलं जलम्, जनस्य पवनमपि पातुमभूदभिलाषो दिवसकरसन्तापात्।

क्रमेण च खरखगमयूखे खण्डितशैशवे, शुष्यत्सरसि, सीदत्स्रोतसि, मन्दनिर्झरे झिल्लिकाझांकारिणि, कातरकपोतकूजितानुबन्धबधिरितविश्वे, श्वसत्पतत्त्रिणि, करीषंकषमरुति, विरलवीरुधि, रुधिरकुतूहलिकेसरिकिशोरकलिह्यमानकठोरधातकीस्तबके, ताम्यत्स्तम्बेरमयूथवमथुतिम्यन्महामहीधरनितम्बे, दिनकरदूयमानद्विरददीनदानाश्यानदानश्यामिकालीनमूकमधुलिहि, लोहितायमानमन्दारसिन्दूरितसीम्नि, सलिलस्यन्दसंदोह-

संस्कृत ज्ञान परम्परा व्यवहार प्रबन्धन

१५. पुराणेतिहासः

प्रथमं प्रश्नपत्रम् **१००**

(क) पुराणवाङ्मयपरिचयः

अष्टादशमहापुराणानि, उपपुराणानि तेषां विषयवैविध्यं च ३०

(ख) श्रीमद्भागवतम् (५-६ स्कन्धौ) ७०

द्वितीयं प्रश्नपत्रम् **१००**

(क) श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्—सुन्दरकाण्डम् ५०

(ख) भक्तिरत्नावली ५०

तृतीयं प्रश्नपत्रम् **१००**

(क) श्रीमद्भगवद्गीता (गूढार्थदीपिका) (२,१२-१५ अध्यायाः) ५०

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्॥१३॥

संस्कृत ज्ञान परम्परा में संगणकीय विज्ञान

प्रश्नपत्रम् १०९

चलनकलने—सीमा: सातत्यम्, अवकलनशीलता, उत्तरोत्तरमवकलनम्, लाइवनेज-प्रमेय:, फलानां प्रसार:, अनिर्णीतरूपाणि, आंशिकोऽवलगुणक:, एकस्य चलराशेर्भूयिष्ठाल्पिष्ठविन्दव:, वक्राणां स्पर्शयोऽभिलम्बाश्च वक्रता, कोष: केन्द्रजा, उन्नतोदरत्वम् नतोदरत्वम्, नतिबिन्दव:, बहुलकबिन्दु:, वक्रालेख:।

$$= \frac{\text{श्रु}^4\text{ज्या}^2\text{ष} + \text{श्रु}^2\left(\frac{\text{ताश्रु}}{\text{ताष}_1}\right)^2 + \text{श्रु}^2\text{ज्या}^2\text{ष}\left(\frac{\text{ताश्रु}}{\text{ताष}}\right)^2}{\text{श्रु}^2\text{ज्या}^2\text{ष}\left(\text{श्रुकोज्याष} + \text{ज्याष}\,\frac{\text{ताश्रु}}{\text{ताष}}\right)^2}$$

इस लिये बदले हुए द्विगुणचल का रूप

$$\iint \sqrt{\left\{\text{श्रु}^2\text{ज्या}^2\text{ष} + \left(\frac{\text{ताश्रु}}{\text{ताष}_1}\right)^2 + \text{ज्या}^2\text{ष}\left(\frac{\text{ताश्रु}}{\text{ताष}}\right)^2\right\}}\ \text{श्रुताष ताष}_1$$

ऐसा हुआ।

यही १५५ वें प्रक्रम में भी लिख आये हैं।

२५१। इस प्रकार से द्विगुणचल का जो परिवर्त्तन किया है उसे क्षेत्ररीति से भी दिखा सकते हैं।

संस्कृत ज्ञान परम्परा में विधि

१६. प्राचीन-राजशास्त्रार्थशास्त्रम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम् १००

कौटलीयार्थशास्त्रस्य प्रथमाधिकरणम् (जयमङ्गलाटीकासहित:)

द्वितीयं प्रश्नपत्रम् १००

कामन्दकीय नीतिसार: (१३-२० सर्गपर्यन्तम्)
(जयमङ्गलाटीकासहित:)

तृतीयं प्रश्नपत्रम् १००

(क) याज्ञवल्क्यस्मृते: राजधर्मप्रकरणम् मिताक्षरासहितम् ५०
(ख) मनुस्मृते: राजधर्मप्रकरणम् ५०

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् १००

(क) शुक्रनीति: (राजशास्त्रार्थशास्त्रविषया:) ७०
(ख) राजनीति-मयूख: ३०

ीति पण्डितैः कथ्यते ॥ १०९ ॥

न ब्राह्मणस्य त्वतिथिर्गृहे राजन्य उच्यते ।
वैश्यशूद्रौ सखा चैव ज्ञातयो गुरुरेव च ॥ ११० ॥

ब्राह्मणके (घर आये हुए), क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, मित्र, बान्धव और गुरु 'अतिथि' नहीं कहे ाते हैं ॥ ११० ॥

ब्राह्मणस्य क्षत्रियादयोऽतिथयो न भवन्ति, क्षत्रियादीनां ब्राह्मणस्योत्कृष्टजातित्वात् । ित्रज्ञातीनामात्मसम्बन्धाद् गुरोः प्रभुत्वात् । अनेनैव न्यायेन क्षत्रियस्य उत्कृष्टो ब्राह्मणः ।जातीयश्च क्षत्रियोऽतिथिः स्यान्नापकृष्टौ वैश्यशूद्रौ । एवं वैश्यस्यापि द्विजातयोऽतिथयो । शूद्रः ॥ ११० ॥

यदि त्वतिथिधर्मेण क्षत्रियो गृहमाव्रजेत् ।
भुक्तवत्सु च विप्रेषु कामं तमपि भोजयेत् ॥ १११ ॥

संस्कृत ज्ञान परम्परा में आयुर्वेद सिद्धांत

१. ऋग्वेदः

चतुर्थप्रश्नपत्रम् १००

(क) ऋग्वेदसंहितायाः प्रथमद्वितीयाध्याययोः सायणभाष्यम् भूमिकाभागवर्जितम् ५०

(ख) आश्वलायनगृह्यसूत्रे १-२ अध्यायौ नारायणवृत्तिसहितौ ५०

ओषधिसूक्त

*[ऋग्वेद दशम मण्डलका ९७वाँ सूक्त ओषधिसूक्त कहलाता है। इस सूक्तके ऋषि आथर्वण भिषग् तथा देवता ओषधि हैं, छन्द अनुष्टुप् है और सूक्तकी कुल ऋचाओंकी संख्या २३ है। इस सूक्तके आरम्भमें ही ऋषिने ओषधियोंको देवरूप मानकर उनसे रोगनिवारण करके आरोग्य तथा दीर्घायुष्यप्राप्तिकी प्रार्थना की है। इस सूक्तमें ओषधियोंका प्राकट्य देवताओंसे भी पूर्व बताया गया है—**'या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यः।'** ओषधियोंको माताके समान रक्षक तथा पालन-पोषण करनेवाली और अन्तःशक्तिसम्पन्ना बताया गया है। आरोग्यप्राप्तिकी दृष्टिसे इस सूक्तका बड़ा महत्त्व है। यहाँ मन्त्रोंका संक्षिप्त भावार्थ दिया जा रहा है—]*

या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च॥ १॥
शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत॥ २॥
ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥ ३॥

संस्कृत ज्ञान परम्परा में कृषि पाराशर एवं वृक्ष आयुर्वेद

२६ निदर्शिका

३२. फलितज्यौतिषम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम् १००

पञ्चस्वराः, लघुपाराशरी वैशिष्ट्यसहिता

द्वितीयं प्रश्नपत्रम् १००

बृहद्वास्तुमाला

तृतीयं प्रश्नपत्रम् १००

बृहत्संहितायाः पूर्वार्द्धे १-१२, २१, ४७, [illegible] अध्यायाः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् १००

बृहत्संहिताया उत्तरार्द्धे ५२-५५, ५६, ६७, ६९, [illegible], [illegible], ९५, १०३ अध्यायाः

अथ वृक्षायुर्वेदाध्यायः

जलाशयों के किनारे बगीचा लगाने का प्रयोजन–

प्रान्तच्छायाविनिर्मुक्ता न मनोज्ञा जलाशयाः।
यस्मादतो जलप्रान्तेष्वारामान् विनिवेशयेत् ॥१॥

जिसके किनारे छाया से रहित हों, ऐसे जलाशय मनोहर नहीं होते हैं अतः जलाशयों के किनारे बगीचा लगाना चाहिए॥१॥

बगीचा लगाने के लिये भूमि–

मृद्वी भूः सर्ववृक्षाणां हिता तस्यां तिलान् वपेत्।
पुष्पितांस्तांश्च मृद्नीयात् कर्मैतत्प्रथमं भुवः ॥२॥

संस्कृत ज्ञान परम्परा में कृषि पाराशर एवं वृक्ष आयुर्वेद

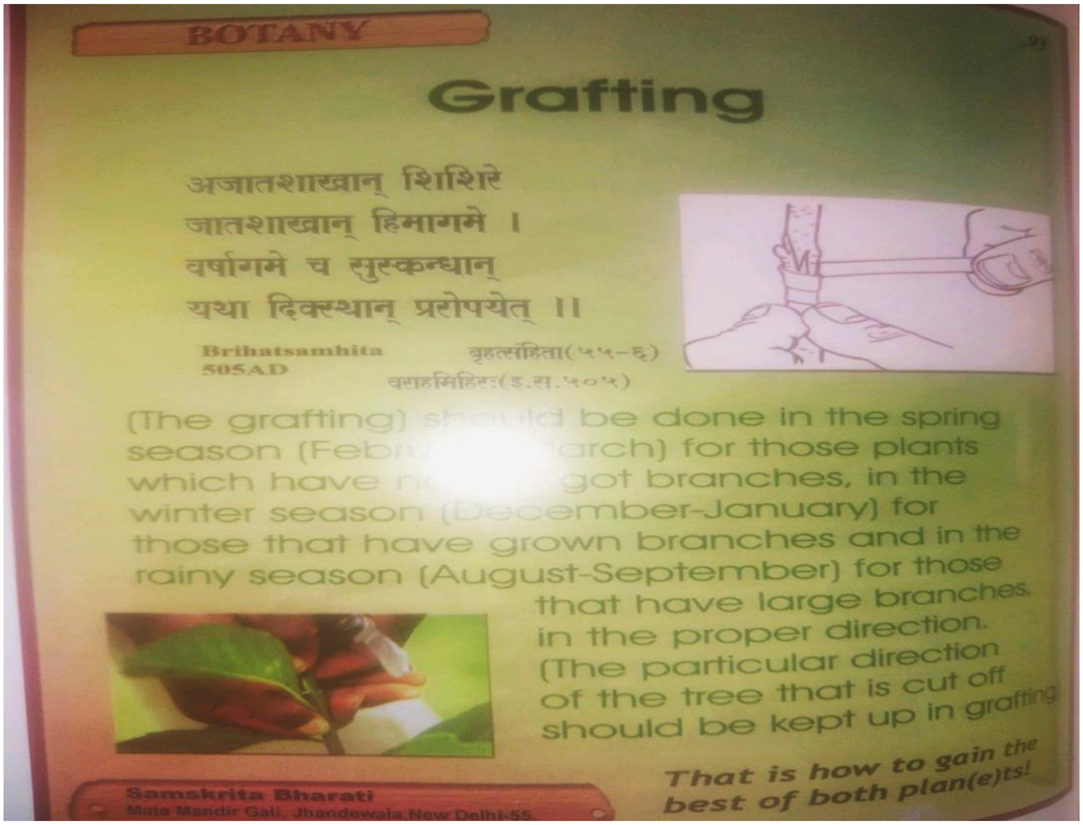

BOTANY

93

Grafting

अजातशाखान् शिशिरे
जातशाखान् हिमागमे ।
वर्षागमे च सुस्कन्धान्
यथा दिक्स्थान् प्ररोपयेत् ॥

Brihatsamhita 505AD — बृहत्संहिता(५५-६) वराहमिहिरः(इ.स.५०५)

(The grafting) sh[illegible]ld be done in the spring season (Febr[illegible]arch) for those plants which have n[illegible] got branches, in the winter season (December-January) for those that have grown branches and in the rainy season (August-September) for those that have large branches in the proper direction. (The particular direction of the tree that is cut off should be kept up in grafting.

That is how to gain the best of both plan(e)ts!

Samskrita Bharati
Mata Mandir Gali, Jhandewala,New Delhi-55

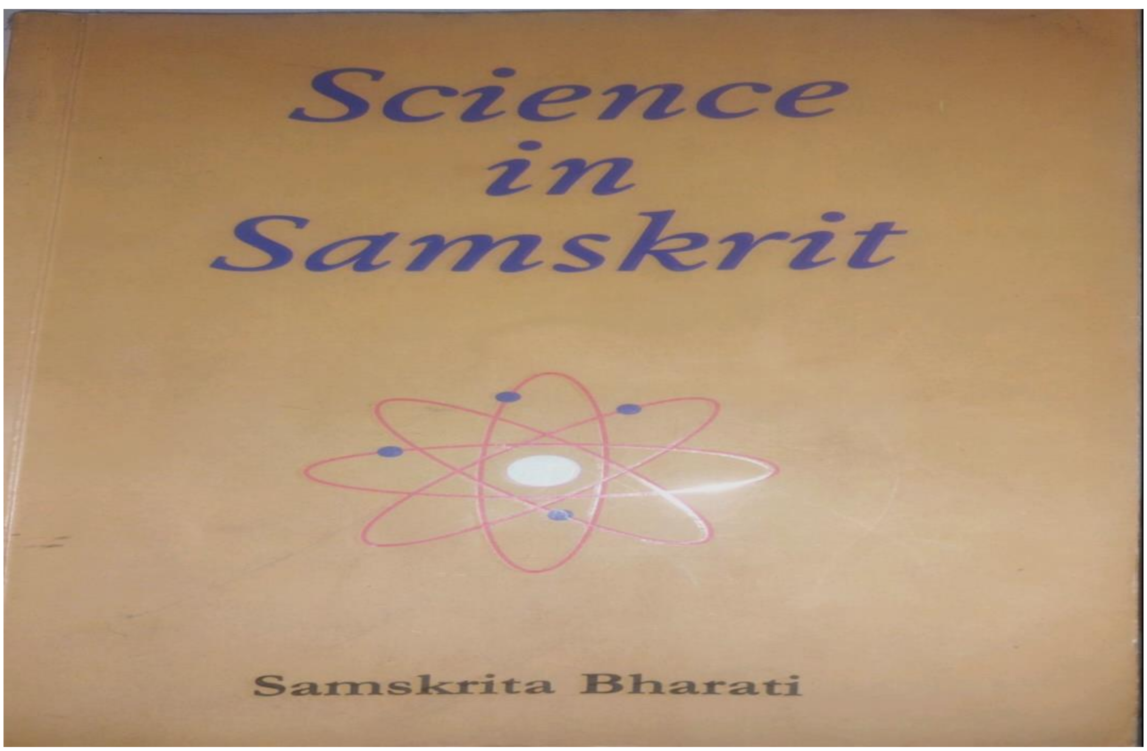

सन्दर्भित ग्रन्थों में वृक्षायुर्वेद के अंश

छात्रों के प्रबोधन हेतु यंत्र प्रयोग एवं निर्माण

ज्योतिष विभाग में यन्त्र निमार्ण कार्यशाला में वेध यन्त्रों का परिचय देते छात्र

दि.२६/०१/२०२४

ज्योतिष विभाग में आधुनिक यन्त्रों से सुसज्जित यन्त्रालय

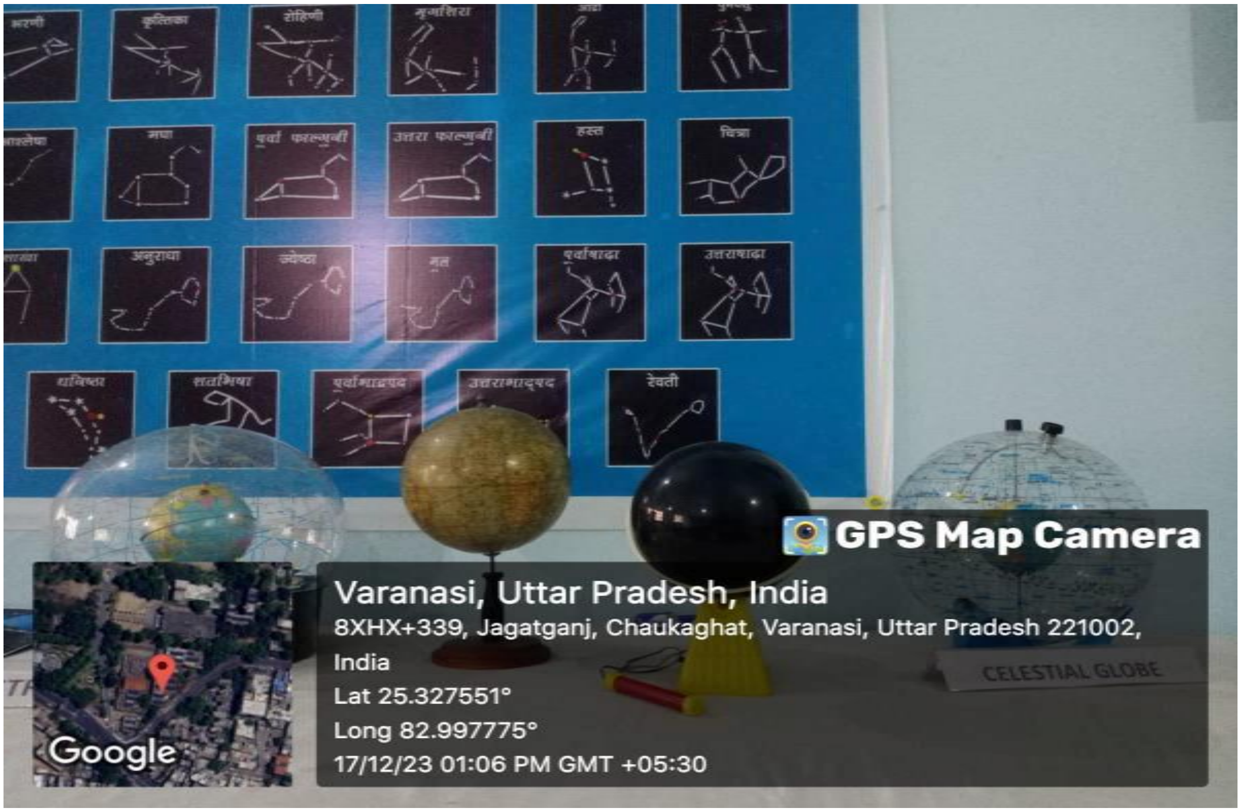

ज्योतिष विभाग में आधुनिक यन्त्रों से सुसज्जित यन्त्रालय